



चाचा जी ने मेरी कुंवारी चुत को बजा डाला

“एक दिन घर पर हमारे रिटायर फौजी चाचा आये ।
अबकी बार चाचा मुझे अलग ही नजर से देख रहे थे ।
रात को मैं चाचा जी के पास सोयी तो क्या हुआ ? पढ़ें
और मजा लें ! ...”

Story By: (komalad)

Posted: Saturday, April 6th, 2019

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [चाचा जी ने मेरी कुंवारी चुत को बजा डाला](#)

चाचा जी ने मेरी कुंवारी चुत को बजा डाला

मेरे प्यारे दोस्तो, मेरा नाम कोमल है और मैं पानीपत हरियाणा (बदली हुई जगह) से हूँ। अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है। कुछ गलती हो जाये तो अपनी प्यारी सी दोस्त समझकर माफ कर देना।

मैं थोड़ा अपने बारे में बता दूँ। मेरी उम्र 19 साल है और मैं बी.कॉम. फर्स्ट ईयर में हूँ। रंग बिल्कुल दूध सा सफेद, रेड लिप्स, नाक पर पहना छोटा सा कोका सुंदरता को और भी बड़ा रहा है। संतरे के आकार के मम्मे 5.6 की हाइट भरा हुआ शरीर, न ज्यादा मोटी ना ज्यादा पतली बस बिल्कुल फिट, पैरों में पायल, गांड थोड़ी सी उभरी हुई, कुल मिलाकर कहूँ तो सूट सलवार में जवान से लेकर बूढ़े तक के लंड देखते ही खड़े हो जाते हैं। खुले बालों को हिलाते हुए और गांड मटकाते हुए जब मैं चलती हूँ तो सभी अपना लंड खड़े हो जाते हैं।

अब मैं कहानी पर आती हूँ। यह कहानी जब कि है जब मैं 12वीं क्लास में थी।

हमारे घर में मैं मम्मी पापा बड़ा भाई और भाभी हैं। मम्मी पापा नीचे वाले फ्लोर पर रहते हैं जहाँ एक कमरा, एक गेस्ट रूम, किचन, लेट-बाथरूम हैं। ऊपर वाले फ्लोर पर 2 कमरे और टॉयलेट हैं। एक कमरे में भाई-भाभी सोते हैं और एक कमरा मेरा है। भाई आर्मी में है तो मैं लगभग भाभी के साथ ही सोती हूँ।

एक दिन जब मैं स्कूल से घर आई तो मैंने देखा घर पर हमारे दूर के चाचा आये हुए थे जो रिटायर फौजी थे। छह फुट की हाइट, चौड़ा सीना, दिखने में मस्त, लगभग 40 की उम्र होगी उनकी। उनकी मेरे साथ अच्छी बनती थी।

जाते ही मैंने उनको नमस्ते करी और उनके गले मिली। मैंने नोटिस किया कि अबकी बार

चाचा मुझे अलग ही नजर से देख रहे हैं। पर मैंने मन का वहम सोचकर इसे नजरअंदाज कर दिया।

शाम का समय हो गया, पापा की रात को जाँब है तो वे अपनी जाँब पर चले गए।

रात का खाना खाने के बाद मम्मी अपने कमरे में टी.वी. देखने लगी, भाभी ऊपर अपने कमरे में चली गयी, मैं चाचा जी के साथ गप्पें लगाने के लिए गेस्ट रूम में रुक गयी। अक्सर हम बहुत देर तक गप्पें मारते रहते हैं।

बात करते करते 11 बज गए, भाभी ने आवाज मुझे लगाई- कोमल, आज सोना नहीं है क्या ?

पर मेरा मन चाचा जी के साथ लगा हुआ था, मैंने उनको मना कर दिया कि मैं यहीं सो जाऊँगी.

तो उनको कोई एतराज नहीं था क्योंकि मैं बचपन से ही उनके साथ सो जाती थी जब वो घर आते थे।

बस यही मेरी जिंदगी का सबसे बड़ी मोड़ था।

बात करते 2 बज गए तो हमने सोने की सोची. डबल बेड था तो एक तरफ चाचा सो गए और एक तरफ मैं सो गई। टाइम ज्यादा हो गया था तो जल्दी ही नींद आ गयी।

रात 3 बजे के करीब मुझे लगा जैसे कोई मेरे मम्मों बहुत ही बेदर्री से दबा रहा है। नींद खुलते ही मैं समझ गयी कि ये और कोई नहीं बल्कि मेरे चाचा ही थे। मैं फिर भी सोने का नाटक करती रही. चाचा जी का हाथ धीरे धीरे मेरे शर्ट के अंदर जाते हुए मेरी ब्रा से टच हुआ, उन्होंने मेरी ब्रा को ऊपर उठाते हुए मेरे मम्मों पर अपना हाथ पहुंचा दिया और चाचा अपनी भतीजी के नंगे चूचों को सहलाने लगे.

अब मुझे भी मजा आ रहा था तो मैं निश्चल पड़ी मजा लेती रही. मेरी तरफ से कोई

प्रतिक्रिया ना होने पर अब चाचा की भी हिम्मत बढ़ी। उनका हाथ मेरी सलवार के नाड़े को टटोलने लगा. अंधेरे की वजह से मैं कुछ देख नहीं पा रही थी। बहुत कोशिश के बाद चाचा मेरी सलवार के नाड़े को खोलने में कामयाब हुए। वे मेरी सलवार को नीचे खींचने लगे पर मुझे लाज लग रही थी इसलिए मैंने अपनी टांगों को जोर से भींच लिया.

पर उनके मजबूत फ़ौजी शरीर के आगे मैं निर्बल लग रही थी, चाचा ने जोर का झटका मारके मेरी सलवार को एक ही बार में अलग कर दिया। उनको पता चल चुका था कि मैं जाग रही हूँ। उन्होंने अब लाइट भी ऑन कर दी थी।

हालांकि चाचा जो भी कर रहे थे, उसमें मेरी पूरी रजामंदी थी, मैं इस सारे कार्यकलाप का आनन्द उठा रही थी फिर भी मैंने दिखावे के लिए उनसे कहा- क्या कर रहे हो चाचा? यह सब ठीक नहीं है! मैं शोर मचा दूंगी.

चाचा बोले- बेटी, इसमें तुम्हारी और तुम्हारे घर वालों की ही बदनामी है ... मचा ले शोर जितना मचाना है।

मैं इस बात से चुप हो गयी और परंतु चाचा जी ने मुझे पकड़कर जोर से अपनी बांहों में ले लिया और बोले- मेरी बिटिया रानी ... आज तो तेरी जवानी के मजे ले कर ही रहूँगा! और एक हाथ से मेरे मम्मों को रगड़ने लगा और दूसरे से मेरी चुत को सहलाने लगा और अपने होंठ मेरे होंठों से लगाकर चूसने लगे।

आखिर मैं भी एक जवान लड़की थी, मैं भी उसके सामने पिघल गयी और उसका साथ देने लगी।

अब चाचा जी उठ खड़े हुए और बहुत ही जल्दी में अपने सारे कपड़े निकाल दिए। मेरी नजर उनके लौड़े पर पड़ी तो मैं तो डर गई. वह बिल्कुल डंडे की तरह खड़ा हुआ और कम से भी कम 7 इंच लम्बा और ढाई इंच मोटा।

मैं डर गयी और चाचा से कहने लगी- चाचा जी, प्लीज मुझे छोड़ दे ... ये बहुत बड़ा है.

वैसे मेरे मन में अपनी पहली चुदाई को लेकर उत्सुकता था, मेरी उत्तेजना भी बढ़ चुकी थी, फिर भी बड़े लंड को देख कर मेरे मन में दर्द का भी उत्पन्न हो गया था.

चाचा ने मेरे शर्ट को भी उतार दिया और मेरी ब्रा के हुक भी तोड़ दिए। संतरे से मम्मों देखते ही जैसे चाचा पागल हो गए और उन पर टूट पड़े, जोर से दबाने लगे और चूसने लगे, बीच बीच में दांतों से भी काटने लगे और मैं कुछ नहीं कर पा रही थी, बस मेरे मुँह से आनन्द भारी सिसकारियां निकल रही थी।

चाचा ने मेरी पेंटी को एक ही झटके में उतार दिया और मेरी बिल्कुल छोटी सी चिकनी गुलाबी चुत ऊपर बस हल्की सी भूरी रूयें आयी हुई देखते ही बस पागल हो गए और बोलने लगे- कोमल, क्या चीज हो तुम! बस मजा ही आ गया! लगता है जैसे भगवान ने तुम्हें बिल्कुल फुर्सत में बनाया हो।

और चाचा मेरी नाजुक अनछुई चुत को चाटने लगे. और सच बताऊँ तो मुझे बहुत ही मजा आने लगा और अपने हाथों से चाचा जी के सिर को चुत पर दबाने लगी। वे अपनी जीभ से कभी चुत के होंठों पर फिराते, कभी जीभ को चुत के अंदर तक घुसा देते.

मुझे इसमें इतना मजा आ रहा था कि बस पूछो मत ... मेरे मुँह से आह आह की सिसकारियां निकल रही थी और मैं बोल रही थी- कम ऑन चाचा जी ... मजा आ रहा है ... और अंदर तक चाट कर बुझा दो मेरी प्यास।

थोड़ी देर के बाद चाचा जी खड़े हो गए, मैंने उनको एक सवालिया नजर से देखा।

चाचा बोले- बेटा, अब समय आ गया तुझे कली से फूल बनाने का!

मैंने कहा- चाचा जी, प्लीज मेरी चुत में खुजली हो रही है, आपको जो करना है, प्लीज जल्दी कीजिये।

उन्होंने टेबल से क्रीम उठायी और उंगली पर लगाकर मेरी चुत में अंदर तक घूमने लगे.

मुझे उंगली का अहसास बहुत ही मजेदार लग रहा था पर मैं आने वाले दर्द से अनजान थी। उन्होंने कुछ क्रीम अपने लंड पर भी लगाई और चुत के होंठों पर अपने लंड को रगड़ने लगे।

मैं तड़फ रही थी, मैंने कहा- प्लीज चाचा जी, अंदर घुसा दो ना!

वो बोले- अभी लो मेरी प्यारी भतीजी!

और यह कहते हुए अपने होंठ मेरे होंठों से लगा दिए और लंड को चुत पर सेट करके एक झटका मारा. पर मेरी चुत बहुत ही छोटी थी, चाचा का लंड नीचे फिसल गया।

इस बात पर उन्हें बहुत गुस्सा आया और चुत की फाँके खोलकर लंड को लगाकर एक इतनी जोर से झटका मारा कि आधा लंड मेरी चुत की सील को तोड़ते हुए अंदर घुस गया। मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने चुत में गर्म लोहे का डंडा डाल दिया है, मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा गया, मैं लगभग बेहोश ही हो गयी. वो तो मेरे होंठों पर चाचा जी के होंठ लगे थे वरना मेरी चीख शायद पड़ोसियों को भी उठा देती।

पर चाचा जी को मुझ पर बिल्कुल रहम नहीं आया और एक और झटका पूरी जोर से मारा, चाचा का लंड मेरी बच्चेदानी से जा टकराया और मैं बेहोश हो गयी। पांच मिनट बाद जब मुझे होश आया तो चाचा जी अभी भी मेरी चुत में जोर जोर से धक्के मार रहे थे। मुझे बहुत ही दर्द हो रहा था परंतु कुछ देर बाद मेरी दर्द भरी चीख सिसकारियों में बदल गयी। अब मुझे भी मजा आ रहा था और मैं जोर जोर से चिल्ला रही थी- और जोर से चाचा जी ... और जोर से, फाड़ दो आज मेरी चुत को! कम ऑन चाचा चाचा जी, बना दो साली का भुर्ता!

मैं अब तक ना जाने कितनी बार झड़ चुकी थी। कुछ मिनट बाद जब चाचा जी का छूटने वाला था तो उन्होंने जो 15-20 आखिरी झटके मारे ... बस पूछो मत ... मेरा पूरा शरीर हिला कर रख दिया और चुत में ही झड़ गए।

झड़ने के बाद चाचा जी साइड में लुढ़क गए और मेरे से चिपक कर लेटे रहे।

मेरी चुत में अभी भी बहुत दर्द हो रहा था पर मैं चाचा जी की फैन हो चुकी थी।

ऐसे ही लेटे लेटे पता नी कब आंख लग गयी।

चाचा जी ने सुबह 5 बजे मुझे एक प्यारी सी किश देकर उठाया मैंने भी जवाब में उन्हें एक किश दे डाली।

उन्होंने जब मुझे मेरी हालत की याद दिलाई तो मुझे जब ध्यान पड़ा कि मैं बिल्कुल नंगी हूँ। मैंने उठकर अपने आप को साफ किया, मेरे इधर उधर पड़े हुए कपड़े चाचा जी ने मुझे उठा करके दिए। लेकिन मैंने कपड़े नहीं पहने. कपड़े हाथ में लेकर अपने कमरे में जाने लगी तो मुझसे चला भी नी जा रहा था. पर जैसे कैसे करके जल्दी से ऊपर अपने कमरे में गयी और कपड़े पहन कर कम्बल ओढ़ कर सो गई।

हमारे घर में सभी देर से उठते हैं तो मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई. वैसे भी उस दिन संडे था मुझे भी स्कूल नहीं जाना था।

भाबी सुबह 9 बजे मुझे उठाने आयी तो मैं बुखार का बहाना लगाकर फिर से सो गयी।

शाम को 4 बजे मेरी आँख खुली जब तक चाचा जी भी जा चुके थे, मेरे दर्द में भी आराम था. मैंने फिर भी एक पेनकिल्लर ली और खाना खाया।

फिर मैंने अपनी एक सहेली को सारी बात फोन पर बतायी. मेरी सहेली ने मामले की गंभीरता को समझा और वो मेरे लिए गर्भनिरोधक गोली लायी. मैंने वो गोली भी खा ली।

तो दोस्तो, कैसी लगी आपको मेरी यह पहले सेक्स की घटना जिसमें मेरे चाचा ने मुझे यानि अपनी भतीजी को चोद कर कली से फूल बना दिया.

आप मुझे adviseabouts@gmail.com पर बतायें।

आप मुझे फेसबुक पर komal advicer पर भी कांटेक्ट कर सकते हैं।

आप लोगों का रेस्पॉस अच्छा रहा तो मैं बहुत ही जल्द अपनी अगली कहानी लिखूंगी।

Other stories you may be interested in

मेरी गर्लफ्रेंड की ग्रुप सेक्स की कामना

मेरा नाम राज है और मेरी गर्लफ्रेंड का नाम रिया है. रिया अभी 25 साल की है और उसकी फिगर 32-30-38 की है उसकी 38 इंच की गांड बड़ी ही मारू है, हर किसी की निगाह उसकी इस फाड़ू गांड [...]

[Full Story >>>](#)

चुदक्कड़ टीचर ने पढ़ाए चुदाई के पाठ-5

मेरी सुध बुध गुम थी. मन रानी के मदमाते कामुकतापूर्ण शरीर में उलझा हुआ था. बार बार रानी ने जो जो किया या कहा था वो सब एक फिल्म की तरह मेरे मन में चल रहा था. कुछ नहीं पता [...]

[Full Story >>>](#)

जीजा के साथ मेरा सुहागदिन-1

मेरा नाम सपना कंवर है और मैं राजस्थान के बीकानेर से हूँ. मेरी हाईट 5 फीट 6 इंच है और साइज़ 34-30-34 है. यह कहानी मेरे और जीजा जी के बीच में हुई सच्ची घटना है. यह कहानी तब की [...]

[Full Story >>>](#)

चुदक्कड़ टीचर ने पढ़ाए चुदाई के पाठ-4

चल अब नीचे बैठ जा घुटनों के बल और स्वर्णामृत का लुत्फ उठा ... बाकि के दो अमृत जब जब समय आएगा तुझे पिला दूंगी.” बाली रानी के कहे अनुसार मैं फर्श पर घुटनों के बल बैठ गया. रानी भी [...]

[Full Story >>>](#)

कच्ची कली मसल डाली-3

दोस्तो, इस कहानी के द्वितीय भाग कच्ची कली मसल डाली-2 में आपने पढ़ा कि मेरे पड़ोस में रहने वाली कामवाली की जवान कमसिन लड़की को नंगी करके उसके कुंवारे बदन के साथ मैं काफी खेल चुका था लेकिन अभी तक [...]

[Full Story >>>](#)

